द लोम्बार्ड रिव्यू

वर्ष 1 अंक 4 | रविवार, 25 अक्टूबर 2026 | रविवार डिजिटल संस्करण

इस अंक में

भारत

बॉन्ड यील्ड लगातार दसवें हफ़्ते चढ़ीं A2

रुपये ने बढ़त गँवाई, भंडार फिर घटा A2

आरबीआई के मिनट्स: दर बढ़ाने पर एकमत, आगे के रुख़ पर मतभेद A2

निजी बैंकों की कमाई बढ़ी, पर जमा पर ख़र्च भी A2

ज़िंक में उछाल, मार्जिन पर सीमेंट चूका A2

निजी क्षेत्र की रफ़्तार बढ़ी, भर्ती नहीं A3

विचार

बड़ी ऑर्डर बुक जियो पर फ़ैसला नहीं है A5

दुनिया

जियो का रिकॉर्ड आईपीओ जियो का बहुत छोटा हिस्सा बेचता है B1

सितंबर की महंगाई का ज़्यादातर हिस्सा पेट्रोल ने दिया B1

जियो की रिकॉर्ड शेयर बिक्री को पेशकश से 22 गुना बोलियाँ

₹30,213 करोड़ की पेशकश शुक्रवार को एक करोड़ से ज़्यादा आवेदनों के साथ बंद हुई। संस्थानों ने अपने कोटे का 70 गुना माँगा, खुदरा निवेशकों ने तीन गुना से भी कम।

अर्नव गोयल



The Aparna Zenon high-rise apartment towers in Hyderabad. IMAHESH / CC BY-SA 4.0

रिलायंस इंडस्ट्रीज़ की टेलीकॉम और डिजिटल इकाई जियो प्लेटफ़ॉर्म्स का आईपीओ शुक्रवार, 23 अक्टूबर को 22.19 गुना सब्सक्रिप्शन के साथ बंद हुआ। ₹30,213 करोड़ के साथ यह भारत की अब तक की सबसे बड़ी शेयर बिक्री है, और इसे एक करोड़ से ज़्यादा आवेदन मिले, जो अपने आप में रिकॉर्ड है।

पेशकश में पूरी तरह 27 करोड़ नए शेयर थे, जिनकी क़ीमत ₹1,065 से ₹1,119 के बीच रखी गई। न्यूनतम बोली 12 शेयरों की थी, यानी ऊपरी क़ीमत पर ₹13,428।

किसने बोली लगाई

माँग असमान थी। म्यूचुअल फ़ंड, बीमा कंपनियों और विदेशी फ़ंड जैसे योग्य संस्थागत ख़रीदारों का हिस्सा 70.55 गुना भरा। उनका कोटा बुधवार को खुलने के 28 मिनट के भीतर भर गया था। ग़ैर-संस्थागत निवेशकों का हिस्सा 14 गुना, रिलायंस के शेयरधारकों का 7.6 गुना, कर्मचारियों का 2.93 गुना और खुदरा निवेशकों का 2.72 गुना भरा।

पेशकश खुलने से पहले 19 अक्टूबर को जियो ने 212 एंकर निवेशकों से ₹1,119 प्रति शेयर पर ₹8,109.85 करोड़ जुटाए। एंकर शेयरों का आधा हिस्सा 30 दिन और बाक़ी 90 दिन के लिए लॉक रहेगा।

इस संख्या का मतलब

ओवरसब्सक्रिप्शन थोड़े से शेयरों की भूख बताता है, कंपनी का मूल्य नहीं। बिक्री वाले शेयर निर्गम के बाद जियो का 3 प्रतिशत से भी कम हैं, जो लिस्टिंग के सामान्य न्यूनतम से काफ़ी नीचे है। संस्थान आमतौर पर अपनी बोली बढ़ाकर लगाते हैं क्योंकि उन्हें कटौती की उम्मीद रहती है, इसलिए 70 गुना का मतलब असली माँग का 70 गुना नहीं है।

शेयरों का आवंटन सोमवार को और बीएसई व एनएसई पर लिस्टिंग बुधवार, 28 अक्टूबर को होनी है। फ़ॉरेक्स कारोबारियों ने पीटीआई से कहा कि इस निर्गम के लिए आए पैसे से डॉलर की उपलब्धता सुधरी, जिससे हफ़्ते की शुरुआत में रुपये को मदद मिली।

छोटे हफ़्ते में रोज़ गिरे शेयर, छोटी कंपनियों पर सबसे ज़्यादा मार

निफ्टी 2.36 प्रतिशत गिरकर 22,600 पर बंद हुआ और स्मॉलकैप सूचकांक 7 प्रतिशत से ज़्यादा टूटा, जो फ़रवरी 2025 के बाद उसका सबसे बुरा हफ़्ता है।

अर्नव गोयल

मंगलवार की दशहरा छुट्टी से छोटे हुए हफ़्ते के चारों सत्रों में गिरावट के साथ भारतीय शेयरों की दो हफ़्ते की बढ़त थम गई। निफ्टी 50 2.36 प्रतिशत गिरकर 22,600 पर आ गया। सेंसेक्स क़रीब 2.1 प्रतिशत गिरकर 73,123 पर रहा।

व्यापक नुक़सान

बड़ी कंपनियों के सूचकांक हफ़्ते की पूरी तस्वीर नहीं दिखाते। निफ्टी मिडकैप 100 5.6 प्रतिशत और निफ्टी स्मॉलकैप 100 7 प्रतिशत से ज़्यादा गिरा, जो फ़रवरी 2025 के बाद उसका सबसे बुरा हफ़्ता है। हाल के शिखर से ये दोनों सूचकांक 13 प्रतिशत से ज़्यादा और 12.1 प्रतिशत नीचे हैं। सोमवार ने ही रुख़ तय कर दिया: निजी बैंकों की गिरावट से सेंसेक्स 876 अंक और निफ्टी 1.11 प्रतिशत गिरकर 22,888.95 पर आ गया।

$116 प्रति बैरल से ऊपर का ब्रेंट क्रूड, लगातार विदेशी बिकवाली और सितंबर तिमाही के मिले-जुले नतीजों ने धारणा को दबाया। विदेशी निवेशकों ने अकेले गुरुवार को ₹3,458.70 करोड़ के शेयर बेचे। अक्टूबर में 23 तारीख़ तक उनकी शुद्ध बिक्री ₹51,466 करोड़ पहुँच गई, जबकि घरेलू संस्थानों ने ₹59,110 करोड़ के शेयर ख़रीदे।

चोट कहाँ लगी

सूचना प्रौद्योगिकी अकेला बड़ा क्षेत्र था जो चढ़ा, 0.2 प्रतिशत। केमिकल 7.1 प्रतिशत, रक्षा 7 प्रतिशत, कंज़्यूमर ड्यूरेबल्स 6.4 प्रतिशत, धातु 5.4 प्रतिशत और रियल्टी 5 प्रतिशत गिरे। बैंकों ने 2.7 प्रतिशत गँवाया। संभावित उतार-चढ़ाव का पैमाना इंडिया विक्स क़रीब 20 प्रतिशत चढ़ा।

तेल उत्पादक उल्टी दिशा में गए: ओएनजीसी 2.4 प्रतिशत और ऑयल इंडिया 0.6 प्रतिशत चढ़े।

ब्रेंट $116.72 पर बंद, अप्रैल के बाद सबसे ऊँचा स्तर

सऊदी तेल क्षेत्र पर हमले और ईरान पर नए हमलों की चर्चा ने क्रूड को चढ़ाया। भारत अपना क़रीब 90 प्रतिशत तेल आयात करता है।

अर्नव गोयल

शुक्रवार को ब्रेंट क्रूड 3.1 प्रतिशत चढ़कर $116.72 प्रति बैरल पर पहुँच गया, जो अप्रैल के अंत के बाद का सबसे ऊँचा बंद भाव है। वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट 4 प्रतिशत चढ़कर $103.44 पर रहा। यह तेज़ी उन ख़बरों के बाद आई कि अमेरिका और इज़राइल ईरान पर नए हमलों की योजना बना सकते हैं। ईरान ने कहा कि वह जवाब देने को तैयार है।

एक दिन पहले यमन के हूती विद्रोहियों के सऊदी ऊर्जा ठिकानों पर हमलों के बाद ब्रेंट 3 प्रतिशत उछला था। इनमें अरामको का एक तेल क्षेत्र भी था। एसबीआई सिक्योरिटीज़ के सनी अग्रवाल ने उन ख़बरों का भी ज़िक्र किया कि अमेरिका के मध्यावधि चुनाव के बाद पश्चिम एशिया का संघर्ष बढ़ सकता है।

भारत पर असर

भारत अपना क़रीब 90 प्रतिशत तेल बाहर से ख़रीदता है, इसलिए क़ीमत जल्दी ही आयात बिल, रुपये और महंगाई तक पहुँचती है। बाज़ार विश्लेषकों को उम्मीद है कि अगले नतीजे दिखाएँगे कि कंपनियाँ ईंधन, ढुलाई और कच्चे माल की बढ़ी लागत का कितना हिस्सा आगे बढ़ा पाती हैं। अपस्टॉक्स ने सरकारी ईंधन कंपनियों, इंटरग्लोब एविएशन, पेंट और टायर कंपनियों को सबसे ज़्यादा जोखिम वाली बताया।

पीटीआई के मुताबिक़ डीलर $120 के आसपास की क़ीमत को ऐसा स्तर मानते हैं जो रुपये की हाल की स्थिरता को ख़तरे में डाल सकता है।

बाज़ार

सेंसेक्स	73,124	-1.6%
निफ्टी 50	22,600	-1.7%
₹ प्रति $	94.71	+0.2%
ब्रेंट	116.72	+6.2%
सोना	4,008	-4.1%

भारत

भारत संक्षेप में

इस अंक के बारे में। यह संस्करण 24 अक्टूबर 2026 तक के हफ़्ते को कवर करता है। नियमित रविवार का अंक छूट जाने के बाद इसे 4 नवंबर को लिखा और प्रकाशित किया गया, और यह सामान्य से छोटा है। इसमें उस हफ़्ते के बाद की कोई ख़बर नहीं है।

गुरुवार की गिरावट। 22 अक्टूबर को सेंसेक्स 460.30 अंक गिरकर 73,249.39 और निफ्टी 123.70 अंक गिरकर 22,687.65 पर आ गया।

इरेडा सपाट। इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी ने ₹2,347 करोड़ की कुल आय पर ₹552 करोड़ का शुद्ध मुनाफ़ा बताया, जो 0.5 प्रतिशत ज़्यादा है।

डेल्टा कॉर्प को घाटा। कसीनो कंपनी ने ₹137 करोड़ के एकमुश्त नुक़सान के बाद ₹106 करोड़ का शुद्ध घाटा बताया। उसके शेयर 5 प्रतिशत से ज़्यादा गिरे।

मर्चेंट बैंकर नियम में ढील। सेबी ने 7 अक्टूबर को कहा कि कम से कम AA- रेटिंग वाले कुछ निर्गमकर्ता पाँच शर्तें पूरी करने पर बिना मर्चेंट बैंकर के काम चला सकते हैं।

बॉन्ड यील्ड लगातार दसवें हफ़्ते चढ़ीं

10 साल की यील्ड 7.474 प्रतिशत पर पहुँच गई, जो आरबीआई के अक्टूबर फ़ैसले से पहले के स्तर से क़रीब 28 आधार अंक ऊपर है।

अर्नव गोयल

पीटीआई के जुटाए आँकड़ों के मुताबिक़ भारत के 10 साल के सरकारी बॉन्ड की यील्ड शुक्रवार को 7.474 प्रतिशत पर बंद हुई। एक हफ़्ते पहले यह क़रीब 7.38 प्रतिशत और 6 अक्टूबर को 7.193 प्रतिशत थी। यह लगातार दसवीं साप्ताहिक बढ़त थी, ऐसा सिलसिला कम से कम 1998 के बाद नहीं दिखा।

डीलरों ने चार कारण बताए: $117 के क़रीब क्रूड, वैश्विक यील्ड में उछाल, बैंकिंग व्यवस्था में तंग नक़दी और आरबीआई से और दर बढ़ोतरी की उम्मीद। रॉकफ़ोर्ट फ़िनकैप के वेंकटकृष्णन श्रीनिवासन ने कहा कि बॉन्ड बाज़ार शायद दिसंबर की एमपीसी बैठक में संभावित दर बढ़ोतरी की क़ीमत भी लगा रहा है।

बजट पर बोझ

ऊँची यील्ड से सरकार को नए उधार पर ज़्यादा चुकाना पड़ता है। करूर वैश्य बैंक के ट्रेज़री प्रमुख वी. रामचंद्र रेड्डी ने पीटीआई से कहा कि अक्टूबर की नीति के बाद की बढ़त ने इस साल अतिरिक्त उधारी की लागत काफ़ी बढ़ा दी है, और यील्ड ऊँची रही तो राजकोषीय घाटे को वित्त देने की लागत बढ़ेगी।

रुपये ने बढ़त गँवाई, भंडार फिर घटा

बुधवार को रुपया 94.38 तक पहुँचा और हफ़्ता 94.94 पर ख़त्म किया। ताज़ा आँकड़ों में भंडार $5 अरब घटा।

अर्नव गोयल

रुपये का हफ़्ता दो हिस्सों में बँटा रहा। बुधवार को यह 53 पैसे चढ़कर 94.38 प्रति डॉलर पर बंद हुआ, फिर गुरुवार को क्रूड के उछाल और शेयरों की गिरावट से 43 पैसे गँवाए, और शुक्रवार को 94.94 पर बंद हुआ। यानी हफ़्ता लगभग वहीं ख़त्म हुआ जहाँ से शुरू हुआ था: 16 अक्टूबर को रुपया 94.96 पर बंद हुआ था।

रिज़र्व बैंक ने शुक्रवार को बताया कि 16 अक्टूबर को ख़त्म हफ़्ते में विदेशी मुद्रा भंडार $5.011 अरब घटकर $721.016 अरब रह गया। विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियाँ $5.758 अरब घटकर $591.847 अरब रहीं, जबकि सोना $706 मिलियन बढ़कर $105.8 अरब हो गया। 4 सितंबर को ख़त्म हफ़्ते में भंडार रिकॉर्ड $785.706 अरब था।

भंडार डॉलर बिक्री के अलावा मूल्यांकन के कारण भी घट सकता है, और साप्ताहिक आँकड़े दोनों को अलग नहीं करते। ब्लूमबर्ग ने बताया कि रिकॉर्ड निचले स्तर के पास से आई तेज़ी को तेल और डॉलर की माँग से सीमाएँ मिल रही हैं।

आरबीआई के मिनट्स: दर बढ़ाने पर एकमत, आगे के रुख़ पर मतभेद

छह सदस्यों ने 5.50 प्रतिशत की बढ़ोतरी का समर्थन किया। दो सदस्य तटस्थ रुख़ बनाए रखना चाहते थे।

अर्नव गोयल

21 अक्टूबर को जारी मिनट्स पुष्टि करते हैं कि मौद्रिक नीति समिति के सभी छह सदस्यों ने 7 अक्टूबर को रेपो दर 25 आधार अंक बढ़ाकर 5.50 प्रतिशत करने के पक्ष में मतदान किया। "कैलिब्रेटेड टाइटनिंग" के रुख़ पर सर्वसम्मति नहीं थी: नागेश कुमार और राम सिंह तटस्थ रहना चाहते थे।

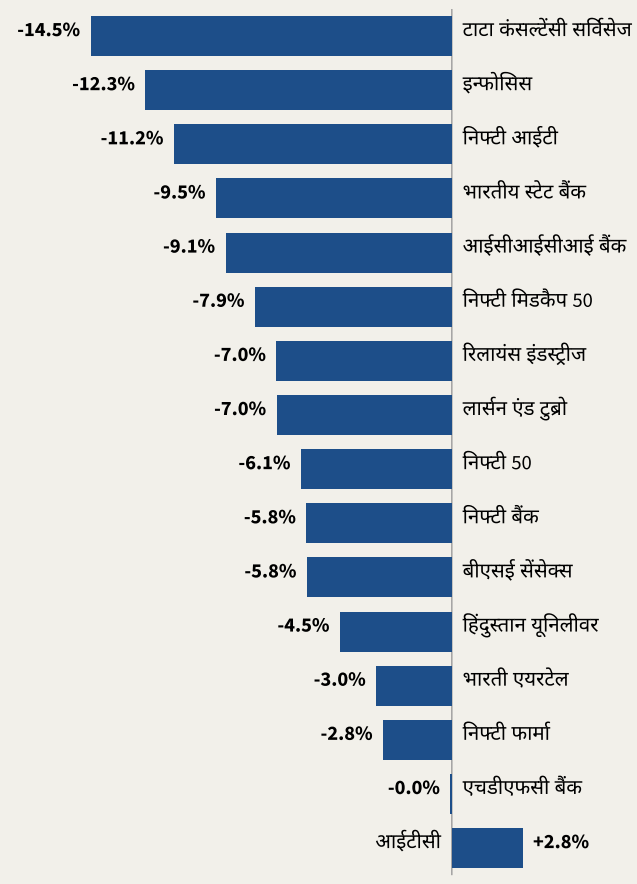
समिति ने कहा कि महंगाई और उसका परिदृश्य पिछले साल जैसा सौम्य नहीं है। उसे 2026-27 में 5.2 प्रतिशत महंगाई की उम्मीद है, तीसरी तिमाही में 6 प्रतिशत, और वास्तविक जीडीपी वृद्धि 7.1 प्रतिशत।

बढ़ोतरी या ठहराव

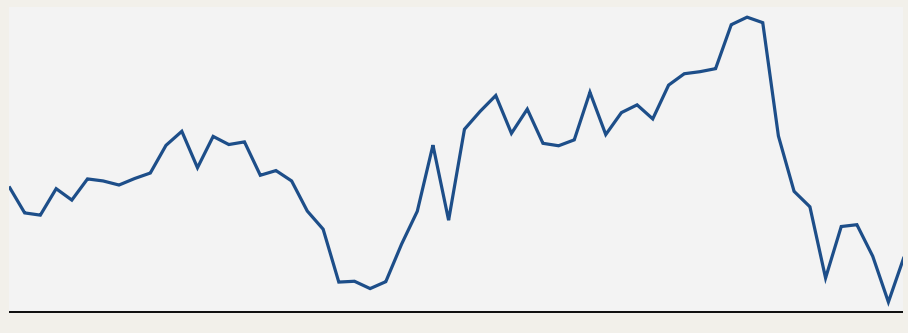
प्रस्ताव कहता है कि नया रुख़ यह संकेत देता है कि कटौती फ़िलहाल नहीं होगी, और अगला क़दम बढ़ोतरी या ठहराव ही हो सकता है। गवर्नर संजय मल्होत्रा ने लिखा कि इस चक्र की अवधि अंतर्निहित महंगाई और दूसरे दौर के असर पर निर्भर है। पूनम गुप्ता ने लिखा कि एक और बढ़ोतरी की ज़रूरत पड़ना संभव है। राम सिंह ने ऊँची दरें लंबे समय तक रखने के बजाय धीरे-धीरे हल्की बढ़ोतरी की वकालत की। समिति की अगली बैठक 2 से 4 दिसंबर को है।

सितंबर: आँकड़ों में

महीने भर में भारतीय सूचकांकों और प्रमुख शेयरों की चाल, और उसके पीछे रुपये व तेल की कीमतें।

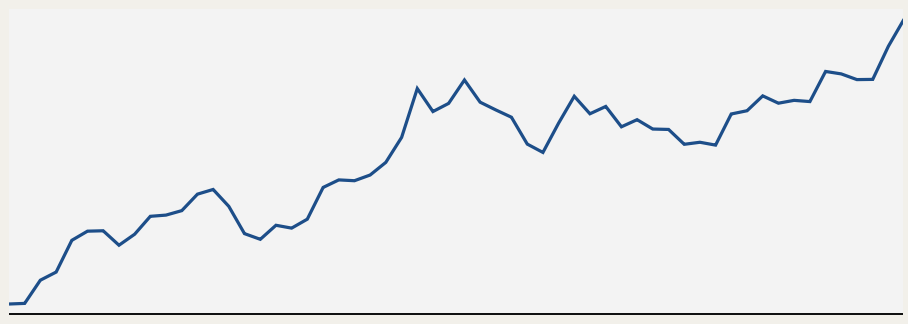


रुपया प्रति डॉलर, पिछले तीन महीने



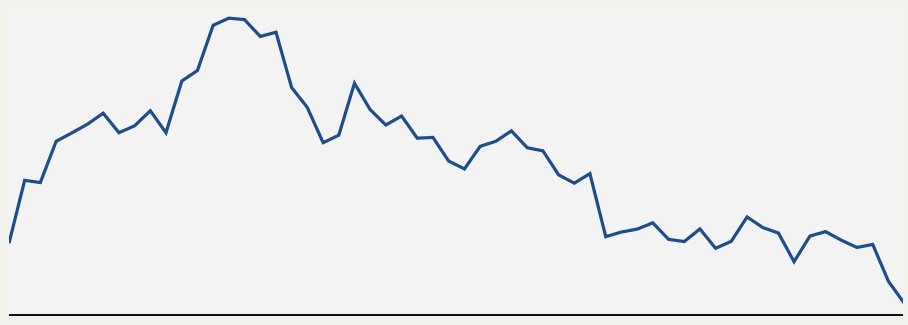
4 अगस्त: 95.33 · उच्च 96.82 · निम्न 94.31 · 23 अक्टूबर: 94.71

ब्रेंट क्रूड, $/बैरल, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 79.36 · उच्च 116.72 · निम्न 79.36 · 23 अक्टूबर: 116.72

सोना, $/औंस, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 4,153 · उच्च 4,698 · निम्न 4,008 · 23 अक्टूबर: 4,008

निजी बैंकों की कमाई बढ़ी, पर जमा पर ख़र्च भी

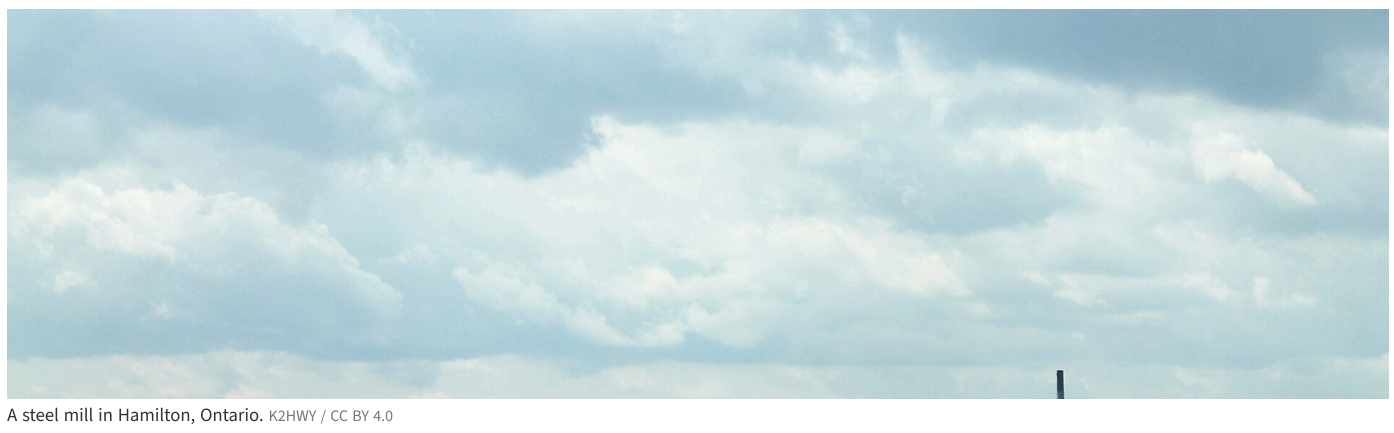
चार बड़े निजी बैंकों का मुनाफ़ा बढ़ा और मार्जिन घटा, जिसकी एक वजह महँगी विदेशी मुद्रा जमा है।

अर्नव गोयल

भारत के सबसे बड़े निजी बैंकों ने सितंबर तिमाही में ज़्यादा मुनाफ़ा और साफ़ क़र्ज़ बही दिखाई, पर हर एक का मार्जिन घटा। अपस्टॉक्स ने विश्लेषकों के हवाले से इस दबाव को एफ़सीएनआर(बी) योजना के तहत जुटाई गई जमा से जोड़ा, जिससे धन की लागत बढ़ी। इकोनॉमिक टाइम्स के मुताबिक़ बड़े निजी बैंकों की धन लागत पिछली तिमाही से क़रीब 15 आधार अंक बढ़ी।

आईसीआईसीआई बैंक का शुद्ध मुनाफ़ा 20.1 प्रतिशत बढ़कर ₹14,843 करोड़ रहा और उसका मार्जिन 4.30 से घटकर 4.18 प्रतिशत रह गया। एक्सिस बैंक का मुनाफ़ा 38 प्रतिशत उछलकर ₹7,003 करोड़ रहा, पर इसका बड़ा हिस्सा प्रावधानों में 52.2 प्रतिशत की गिरावट से आया; उसका मार्जिन 3.73 से घटकर 3.36 प्रतिशत रहा। कोटक महिंद्रा बैंक का मुनाफ़ा 29 प्रतिशत बढ़कर ₹4,212 करोड़ रहा, और मार्जिन 4.54 के मुक़ाबले 4.31 प्रतिशत। एचडीएफ़सी बैंक की शुद्ध ब्याज आय 10 प्रतिशत बढ़कर ₹34,619 करोड़ रही और कुल परिसंपत्तियों पर मार्जिन 3.16 प्रतिशत रहा।

डूबत क़र्ज़ घटे। सकल एनपीए एचडीएफ़सी बैंक में 1.11 प्रतिशत, आईसीआईसीआई बैंक में 1.20 प्रतिशत और कोटक में 1.04 प्रतिशत रहे, जो सभी एक साल पहले से कम हैं।



A steel mill in Hamilton, Ontario. K2HWY / CC BY 4.0

ज़िंक में उछाल, मार्जिन पर सीमेंट चूका

हिंदुस्तान ज़िंक का मुनाफ़ा 142 प्रतिशत बढ़ा। अल्ट्राटेक का परिचालन मार्जिन बाज़ार की उम्मीद से कम रहा और शेयर गिरे।

अर्नव गोयल

19 अक्टूबर के दो नतीजों ने दिखाया कि कमोडिटी चक्र भारतीय कंपनियों पर कितना असमान असर डाल रहा है। हिंदुस्तान ज़िंक ने जुलाई से सितंबर में ₹6,412 करोड़ का समेकित शुद्ध मुनाफ़ा बताया, जो एक साल पहले के ₹2,649 करोड़ से 142 प्रतिशत ज़्यादा है। राजस्व ₹15,093 करोड़ रहा। उसका परिचालन मार्जिन पिछली तिमाही के 58.6 प्रतिशत से बढ़कर 61.3 प्रतिशत हो गया। शेयर क़रीब 4 प्रतिशत चढ़े।

अल्ट्राटेक सीमेंट ने ₹23,295 करोड़ के राजस्व पर ₹1,494 करोड़ का शुद्ध मुनाफ़ा बताया। उसका 15.97 प्रतिशत का परिचालन मार्जिन बाज़ार के 16.6 प्रतिशत के अनुमान से कम रहा, और शेयर 2.36 प्रतिशत गिरकर ₹10,650 पर आ गए।

वारी रिन्यूएबल टेक्नोलॉजीज़ में भी ऐसा ही दबाव दिखा। उसका राजस्व 36.5 प्रतिशत बढ़कर ₹1,058 करोड़ रहा, फिर भी शुद्ध मुनाफ़ा 36.5 प्रतिशत घटकर ₹74 करोड़ रह गया और मार्जिन 20.4 से घटकर 15.1 प्रतिशत हो गया।

निजी क्षेत्र की रफ़्तार बढ़ी, भर्ती नहीं

अक्टूबर में फ़्लैश कंपोज़िट सूचकांक 56.7 पर पहुँचा, जो जून के बाद सबसे तेज़ है। रोज़गार सृजन साल का सबसे धीमा रहा।

अर्नव गोयल

शुक्रवार को जारी एचएसबीसी फ़्लैश सर्वे के मुताबिक़ अक्टूबर में भारत का निजी क्षेत्र चार महीने की सबसे तेज़ रफ़्तार से बढ़ा। कंपोज़िट आउटपुट सूचकांक सितंबर के 55.9 से बढ़कर 56.7 हो गया। 50 से ऊपर की कोई भी रीडिंग विस्तार बताती है।

काम सेवा क्षेत्र ने किया। सेवा सूचकांक 56.2 पर पहुँचा, जबकि ख़रीद की धीमी बढ़त से विनिर्माण 55.1 से फिसलकर 54.9 पर आ गया। यह रीडिंग 2026 के अब तक के औसत से नीचे रही।

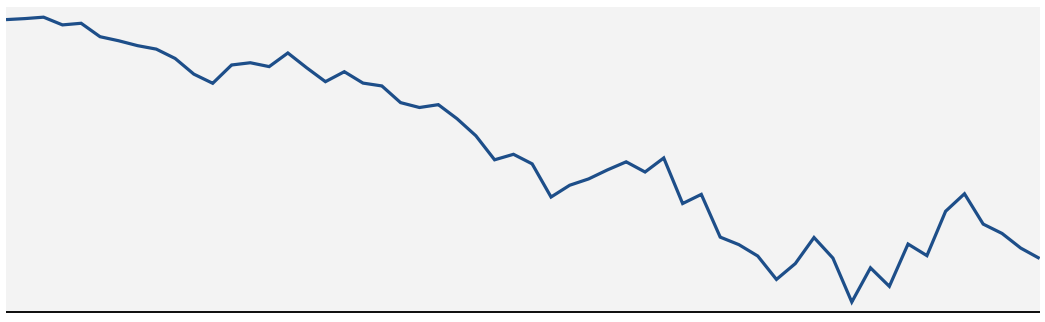
कमज़ोर कड़ी रोज़गार रही। निजी क्षेत्र में नौकरियाँ मामूली बढ़ीं और यह रफ़्तार इस साल अब तक की सबसे धीमी है। अक्टूबर के अंतिम आँकड़े नवंबर की शुरुआत में आएँगे।

भारतीय बाज़ार

शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2026 तक के बंद भाव। पाँच और 21 कारोबारी सत्रों में बदलाव। स्रोत: याहू फ़ाइनेंस।

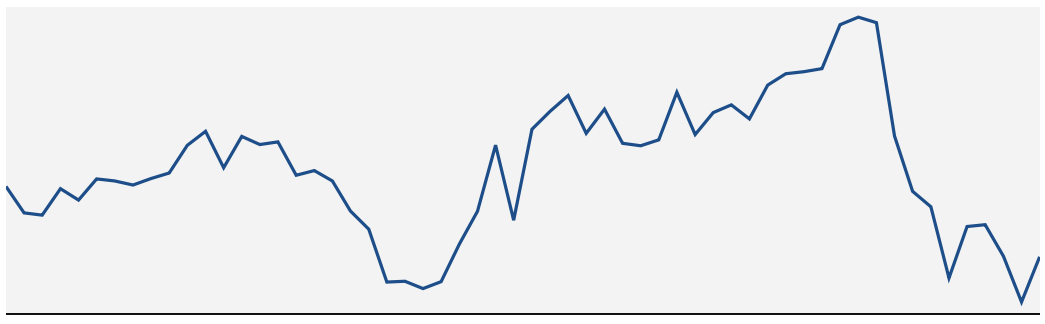
	अंतिम	सप्ताह	माह
सूचकांक			
बीएसई सेंसेक्स	73,124	-1.6%	-1.9%
निफ्टी 50	22,600	-1.7%	-3.1%
निफ्टी बैंक	54,287	-2.7%	-3.4%
इंडिया विक्स	16.86	+20.2%	+53.3%
सेक्टर			
निफ्टी आईटी	31,996	+4.2%	+11.9%
निफ्टी फार्मा	25,329	-1.9%	-5.9%
निफ्टी मिडकैप 50	16,066	-5.2%	-10.1%
रुपया			
रुपया प्रति डॉलर	94.71	+0.2%	-1.1%
रुपया प्रति यूरो	106.32	-0.2%	-2.8%
रुपया प्रति पाउंड	126.21	+0.6%	-0.4%

निफ्टी 50, पिछले तीन महीने



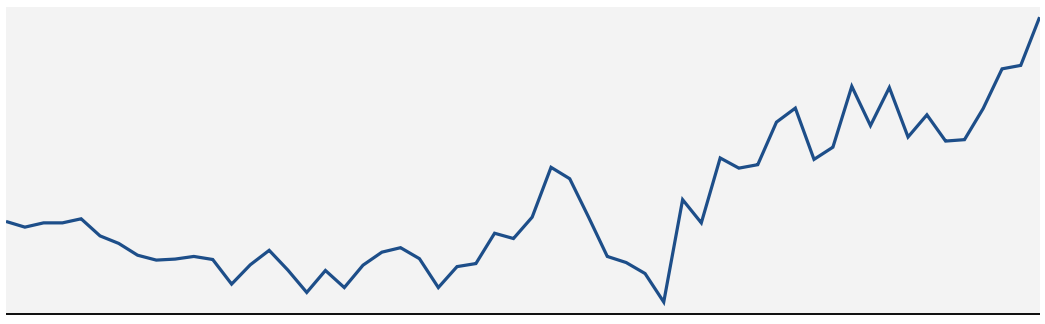
4 अगस्त: 24,615 उच्च 24,636 · निम्न 22,232 23 अक्टूबर: 22,600

रुपया प्रति डॉलर, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 95.33 उच्च 96.82 · निम्न 94.31 23 अक्टूबर: 94.71

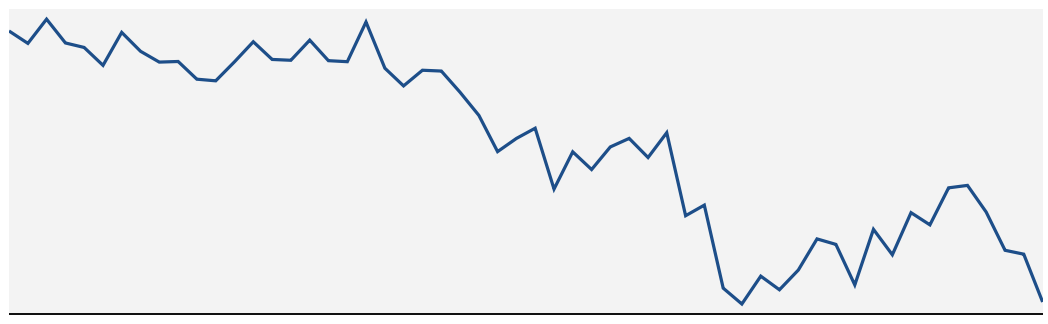
इंडिया विक्स, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 12.19 उच्च 16.86 · निम्न 10.35 23 अक्टूबर: 16.86

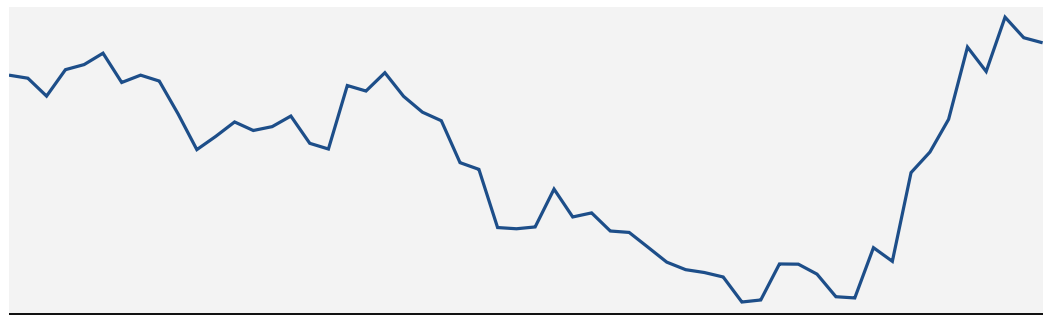
	अंतिम	सप्ताह	माह
प्रमुख शेयर, ₹			
रिलायंस इंडस्ट्रीज	1,190	-2.1%	-4.1%
एचडीएफसी बैंक	692.80	-4.7%	-6.2%
आईसीआईसीआई बैंक	1,394	+0.3%	+4.1%
भारती एयरटेल	1,892	+2.1%	+4.1%
टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज	2,530	+7.7%	+20.2%
इन्फोसिस	1,154	+3.9%	+12.1%
भारतीय स्टेट बैंक	958.60	-0.1%	-2.9%
आईटीसी	257.90	-2.3%	-3.0%
लार्सन एंड टुब्रो	3,647	+0.4%	-5.7%
हिंदुस्तान यूनिलीवर	1,815	-4.3%	-6.2%

निफ्टी बैंक, पिछले तीन महीने



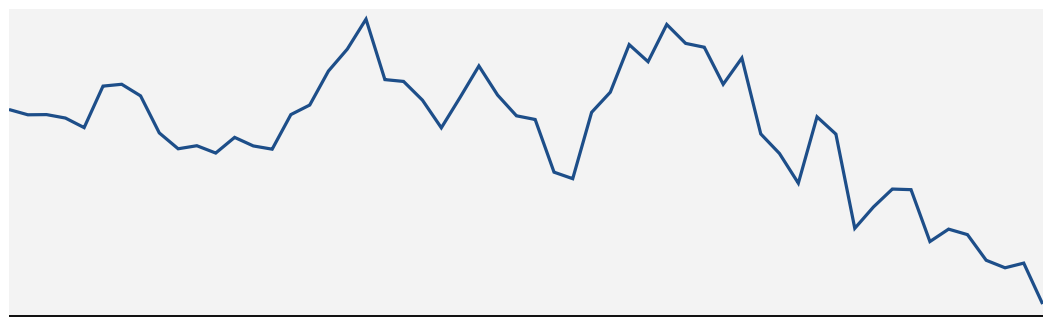
4 अगस्त: 57,907 उच्च 58,064 · निम्न 54,260 23 अक्टूबर: 54,287

निफ्टी आईटी, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 31,454 उच्च 32,422 · निम्न 27,670 23 अक्टूबर: 31,996

निफ्टी फार्मा, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 26,598 उच्च 27,186 · निम्न 25,329 23 अक्टूबर: 25,329

विचार

बड़ी ऑर्डर बुक जियो पर फ़ैसला नहीं है

कंपनी के छोटे से हिस्से के लिए 70 गुना माँग मूल्य से ज़्यादा कमी के बारे में बताती है। नियामकों और निवेशकों को इसे इसी तरह पढ़ना चाहिए।

जियो प्लेटफ़ॉर्म्स की पेशकश अपने आकार और ऑर्डर बुक के लिए याद की जाएगी। इन दोनों में से किसी को भी कंपनी के मूल्य पर फ़ैसला नहीं मानना चाहिए।

इस पेशकश में जियो का 3 प्रतिशत से भी कम हिस्सा बिका। ऐसा तभी संभव हुआ जब बहुत बड़ी कंपनियों के लिए नियम ढीले किए गए। जब इतने कम शेयर बिक्री पर हों, और संस्थान यह जानते हुए ऊँची बोली लगाएँ कि कटौती होगी, तब 70.55 गुना जैसा आँकड़ा काफ़ी हद तक यही बताता है कि शेयर कितने दुर्लभ हैं।

ज़्यादा बताने वाली संख्या शायद सबसे छोटी है। देश की सबसे बड़ी लिस्टिंग का मौक़ा मिलने पर खुदरा निवेशकों का हिस्सा 2.72 गुना भरा। यह स्वस्थ माँग है, उन्माद नहीं, और यह उस हफ़्ते आई जब स्मॉलकैप शेयर 7 प्रतिशत से ज़्यादा टूटे।

कम फ़्लोट के दोनों पहलू हैं। यह क़ीमत जल्दी चढ़ा सकता है, और इसका मतलब है कि बाज़ार को कारोबार के मूल्यांकन का असली काम अभी करना है। वह काम तब होगा जब लॉक-इन ख़त्म होंगे और जियो 25 प्रतिशत सार्वजनिक हिस्सेदारी की ओर बढ़ते हुए और शेयर बेचेगा। ख़रीदारों को इस हफ़्ते के आँकड़ों को क़ीमत तय होने की शुरुआत मानना चाहिए, नतीजा नहीं।

आने वाला हफ़्ता

सोमवार, 26 अक्टूबर। जियो प्लेटफ़ॉर्म्स के शेयरों का आवंटन होना है।

मंगलवार, 27 अक्टूबर। निफ्टी के अक्टूबर डेरिवेटिव अनुबंधों की समाप्ति। फ़ेडरल रिज़र्व की दो दिन की बैठक शुरू।

बुधवार, 28 अक्टूबर। जियो प्लेटफ़ॉर्म्स की बीएसई और एनएसई पर लिस्टिंग होनी है। फ़ेड अपना फ़ैसला सुनाएगा; बाज़ार 3.75 से 4 प्रतिशत पर ठहराव की उम्मीद कर रहा है।

गुरुवार, 29 अक्टूबर। यूरोपीय केंद्रीय बैंक अपना फ़ैसला सुनाएगा।

शुक्रवार, 30 अक्टूबर। बैंक ऑफ़ जापान अपना फ़ैसला सुनाएगा।

दुनिया

दुनिया संक्षेप में

वॉल स्ट्रीट फिसला। एसऐंडपी 500 हफ़्ते में 0.5 प्रतिशत गिरकर 7,623 और नैस्डैक 0.7 प्रतिशत गिरा। डाउ 0.4 प्रतिशत चढ़ा और तीसरी साप्ताहिक बढ़त दर्ज की, हालाँकि शुक्रवार को उसने 652 अंक गँवाए।

ट्रेज़री। शुक्रवार को 10 साल की ट्रेज़री यील्ड क़रीब 4.99 प्रतिशत थी।

फ़ेड की संभावनाएँ। फ़्यूचर्स अगले हफ़्ते ठहराव की 90 प्रतिशत और दिसंबर में बढ़ोतरी की क़रीब 80 प्रतिशत संभावना दिखा रहे थे।

एआई और नौकरियाँ। अमेरिकन एक्सप्रेस के शेयर 3 प्रतिशत से ज़्यादा गिरे, जब उसने एआई की तैयारी का हवाला देते हुए अपने क़रीब 5 प्रतिशत कर्मचारी घटाने की बात कही।

जियो का रिकॉर्ड आईपीओ जियो का बहुत छोटा हिस्सा बेचता है

जियो अपना बहुत छोटा हिस्सा बेच रहा है, इसलिए पेशकश का आकार उसके मूल्य के बारे में उतना नहीं बताता जितना रिकॉर्ड से लगता है।

अर्नव गोयल · ऑनलाइन प्रकाशित: 23 अक्टूबर



Jio mobile phone towers in Mathurapur village, Bangaon, West Bengal. शाँ शुभेन्दु / CC BY-SA 4.0

जियो प्लेटफ़ॉर्म्स के लिए बोली शुक्रवार को बंद हुई। ₹1,065 से ₹1,119 प्रति शेयर के प्राइस बैंड के ऊपरी सिरे पर यह इश्यू ₹30,213 करोड़, यानी लगभग 3 अरब डॉलर जुटाता है, और अक्टूबर 2024 में Hyundai Motor India के ₹27,870 करोड़ के इश्यू को पीछे छोड़कर भारत के इतिहास का सबसे बड़ा प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम बन जाता है। यह Reliance Industries की डिजिटल और टेलीकॉम शाखा का मूल्यांकन लगभग ₹10.3 लाख करोड़, यानी लगभग 108 अरब डॉलर आंकता है। शेयर 28 अक्टूबर को BSE और NSE पर लिस्ट होने वाले हैं।

मांग पर कभी शक नहीं था। कम स्पष्ट बात यह है कि ख़रीदारों को मिल क्या रहा है। भारत का सबसे बड़ा आईपीओ जियो का केवल छोटा हिस्सा बेचता है, जुटाए गए लगभग सारे पैसे उसके उधारदाताओं के पास जाते हैं, और कंपनी पर Reliance का नियंत्रण पक्का बना रहता है।

छोटे फ़्लोट वाला रिकॉर्ड आईपीओ

जियो अधिकतम 27 करोड़ नए शेयर जारी कर रही है, जो इश्यू के बाद कंपनी का लगभग 2.9 प्रतिशत है। उसका कोई मौजूदा मालिक नहीं बेच रहा। यह फ़्लोट सिर्फ़ उन नियमों की वजह से संभव है जिन्हें सितंबर 2025 में SEBI ने बहुत बड़ी कंपनियों के लिए मंज़ूरी दी थी। लिस्टिंग के बाद ₹5 लाख करोड़ से ज़्यादा मूल्य वाली फ़र्में अब केवल 2.5 प्रतिशत तक फ़्लोट कर सकती हैं, बशर्ते पेशकश कम से कम ₹15,000 करोड़ की हो, और जिन कंपनियों की सार्वजनिक हिस्सेदारी 15 प्रतिशत से कम है उन्हें सामान्य 25 प्रतिशत न्यूनतम तक पहुँचने के लिए दस साल तक का समय मिलता है।

इन नियमों से पहले जियो को कम से कम 5 प्रतिशत बेचना पड़ता, यानी ₹50,000 करोड़ से ज़्यादा की पेशकश। छोटे फ़्लोट से सौदा पचाना आसान हुआ, पर इसका मतलब यह भी है कि अगले कई साल जियो के ज़्यादातर शेयर ट्रेड नहीं होंगे। बाज़ार में कम शेयर होने पर बड़े फ़ंड ख़रीदें या बेचें तो क़ीमतें तेज़ी से हिल सकती हैं। जैसे-जैसे जियो 25 प्रतिशत सार्वजनिक शेयरहोल्डिंग की न्यूनतम सीमा की ओर बढ़ेगी, उस पर नए शेयरों की लगातार आपूर्ति भी आएगी।

पैसा बैंकों के पास जाता है

चूँकि हर शेयर नया है, इसलिए आय जियो को मिलती है, Reliance को नहीं, और न ही उन बाहरी निवेशकों को जिन्होंने 2020 में हिस्सेदारी ख़रीदी थी। प्रॉस्पेक्टस के अनुसार ₹27,500 करोड़, यानी पैसे का लगभग 91 प्रतिशत, टेलीकॉम सहायक Reliance Jio Infocomm के उधार चुकाएगा। बाक़ी सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए है।

जियो की बैलेंस शीट के हिसाब से यह बड़ी चुकौती है। प्रॉस्पेक्टस के अनुसार 30 जून को समेकित उधार ₹61,372 करोड़ थे, इसलिए यह इश्यू उनमें से लगभग आधे को चुका देता है। जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी ने कहा है कि कंपनी नेट-डेट-फ़्री होने की ओर बढ़ रही है। इस दावे के साथ एक सावधानी जुड़ती है। जियो पर सरकार को स्पेक्ट्रम के स्थगित भुगतान भी बाक़ी हैं, जिन्हें SP Tulsian के विश्लेषण में लगभग ₹1.04 लाख करोड़ आँका गया है, और IPO इन दायित्वों को नहीं छूता। Business Today ध्यान दिलाता है कि स्थगित स्पेक्ट्रम देनदारियाँ और मूल्यह्रास मुनाफ़े पर भार डालते रहेंगे।

कौन ख़रीद रहा है

संस्थाएँ भारी ख़रीद कर रही हैं। 20 अक्टूबर को, सार्वजनिक पेशकश खुलने से पहले, जियो ने 212 एंकर निवेशकों को ₹1,119 प्रति शेयर पर 7.25 करोड़ शेयर दिए, जिससे ₹8,110 करोड़ जुटे, यानी इश्यू का लगभग 27 प्रतिशत। Business Today द्वारा उद्धृत बैंकिंग सूत्रों के अनुसार एंकर बुक पर ₹2.5 लाख करोड़ से ज़्यादा की बोलियाँ आईं। आख़िरी दिन दोपहर 3 बजे तक HDFC Securities के आँकड़ों के अनुसार इश्यू 12.55 गुना सब्सक्राइब हो चुका था, क्वालिफ़ाइड इंस्टीट्यूशनल ख़रीदार 32.77 गुना और धनी व्यक्ति 13.38 गुना पर। आधिकारिक कुल आँकड़े बंद होने के बाद एक्सचेंजों से आएँगे।

आम निवेशक ज़्यादा सतर्क रहे हैं। उसी समय तक रिटेल हिस्सा 2.51 गुना सब्सक्राइब हुआ था, जो एक दिन पहले लगभग 1.5 गुना था। जिस कंपनी के 500 मिलियन से ज़्यादा ग्राहक हैं और जो भारत के सबसे जाने-माने नामों में है, उसके लिए यह संतुलित प्रतिक्रिया है। न्यूनतम बोली 12 शेयर की थी, यानी प्राइस बैंड के ऊपरी सिरे पर ₹13,428। संस्थाएँ अपने आवंटन का जितना हिस्सा चाहती थीं, आम बचतकर्ता अपने आवंटन का उसका लगभग तेरह गुना कम चाहते थे।

एक टैरिफ़ दाँव के लिए 33 गुना

प्राइस बैंड के ऊपरी सिरे पर ख़रीदार मार्च 2026 को समाप्त वर्ष के लिए जियो की प्रति शेयर आय ₹33.63 के लगभग 33 गुने पर भुगतान कर रहे हैं। जियो साफ़ तौर पर लाभ में है। उस वर्ष उसने ₹1,46,885 करोड़ के राजस्व पर कर के बाद ₹30,049 करोड़ कमाए। अप्रैल से जून की तिमाही में उसका EBITDA मार्जिन 54.7 प्रतिशत रहा।

सवाल वृद्धि का है, और भारतीय टेलीकॉम में वृद्धि का मतलब टैरिफ़ है। जून तिमाही में जियो का प्रति उपयोगकर्ता औसत राजस्व (ARPU) ₹215.6 प्रति माह रहा, जो एक साल पहले से केवल 3 प्रतिशत ज़्यादा है। उसके मुख्य प्रतिस्पर्धी Bharti Airtel प्रति उपयोगकर्ता काफ़ी ज़्यादा कमाते हैं, हाल की गिनती के अनुसार लगभग ₹257। Business Today के अनुसार Centrum Broking अगले तीन-चार महीनों में लगभग 12 प्रतिशत टैरिफ़ वृद्धि की उम्मीद करता है। नेटवर्क पहले से बना है, इसलिए किसी भी मूल्य वृद्धि का ज़्यादातर हिस्सा सीधे मुनाफ़े में जाएगा। यह मूल्यांकन मानता है कि जियो और Airtel साथ-साथ क़ीमतें बढ़ाते रहेंगे और कोई प्रतिस्पर्धी उन्हें काटेगा नहीं। Vodafone Idea कमज़ोर होने के साथ पिछले कुछ सालों का यही पैटर्न रहा है। पर इसकी कोई गारंटी नहीं।

एक कंपनी के भीतर एक कंपनी

ख़रीदार उस कारोबार में अल्पांश शेयरधारक होंगे जिस पर Reliance का नियंत्रण है। इश्यू से पहले Reliance के पास 66.43 प्रतिशत है, और इसके बाद उसके पास लगभग 64.4 प्रतिशत रहेगा। प्रॉस्पेक्टस उन सेवाओं की सूची देता है जिनके लिए जियो लंबी अवधि के समझौतों के तहत Reliance की इकाइयों पर निर्भर है, और स्वीकार करता है कि नियंत्रक शेयरधारक के हित दूसरे निवेशकों से अलग हो सकते हैं। Jio Platforms अपने नाम से दिखने वाली तुलना में कम विविध भी है। विश्लेषकों द्वारा प्रॉस्पेक्टस के सार के अनुसार, टेलीकॉम कारोबार Reliance Jio Infocomm, इसकी EBITDA का लगभग 94 प्रतिशत बनाता है।

शुरुआती निवेशकों को अच्छा फ़ायदा हुआ है। Meta ने 2020 में जियो का 9.99 प्रतिशत ₹43,574 करोड़ में लिया, और Google ने 7.73 प्रतिशत के लिए ₹33,737 करोड़ दिए। ₹1,119 प्रति शेयर पर The Lombard Review का हिसाब उनकी संयुक्त हिस्सेदारी लगभग ₹1.77 लाख करोड़ रखता है, यानी लगभग ₹1 लाख करोड़ का काग़ज़ी लाभ। इस इश्यू में दोनों में से कोई नहीं बेच रहा।

किन बातों पर नज़र रखें

एक्सचेंजों से अंतिम सब्सक्रिप्शन आँकड़े बंद होने के बाद आएँगे, और आवंटन 26 अक्टूबर को अपेक्षित है। 28 अक्टूबर की लिस्टिंग उसी दिन पड़ती है जिस दिन अमेरिकी फ़ेडरल रिज़र्व का ब्याज दर फ़ैसला है, जो एक बड़े नए शेयर के ट्रेड शुरू करने के लिए अटपटी तारीख़ है। पहले दिन के बाद शेयर दो बातों पर निर्भर करेगा: क्या टैरिफ़ वृद्धि समय पर आती है, और क्या Reliance अपने नए अल्पांश शेयरधारकों के साथ अच्छा बर्ताव करता है।

सितंबर की महंगाई का ज़्यादातर हिस्सा पेट्रोल ने दिया

अमेरिका में सितंबर की क़ीमत बढ़ोतरी का ज़्यादातर हिस्सा पेट्रोल से आया। अब फ़ेड को तय करना है कि इसमें से कितने को नज़रअंदाज़ करे।

अर्नव गोयल · ऑनलाइन प्रकाशित: 22 अक्टूबर



A Freedom Fuel Network gas station in Egg Harbor Township, New Jersey, on August 23, 2026. SNOWFIRE / CC BY 4.0

अमेरिकी उपभोक्ता कीमतें सितंबर में 0.6 प्रतिशत बढ़ीं, जबकि अगस्त में 0.4 प्रतिशत बढ़ी थीं, और एक साल पहले की तुलना में 3.7 प्रतिशत ऊपर रहीं, जो अगस्त के 3.4 प्रतिशत से ज़्यादा है। पूर्वानुमानकर्ताओं को 3.6 प्रतिशत की उम्मीद थी। 14 अक्टूबर को ब्यूरो ऑफ़ लेबर स्टैटिस्टिक्स द्वारा जारी यह रिपोर्ट 3 नवंबर के मध्यावधि चुनावों से पहले महंगाई का आख़िरी आँकड़ा थी, और यह फ़ेडरल रिज़र्व की बैठक से दो हफ़्ते पहले आई, जो तय करेगी कि दो महीने में दूसरी बार दरें बढ़ाई जाएँ या नहीं।

जल्दी पढ़ें तो आँकड़े बताते हैं कि महंगाई तेज़ हो रही है। ध्यान से पढ़ें तो वे एक संकीर्ण बात कहते हैं: एक उत्पाद उसका ज़्यादातर हिस्सा चला रहा है।

बढ़त का आधा हिस्सा एक ही पंप से

अकेले सितंबर में गैसोलीन सूचकांक 9.1 प्रतिशत उछला। ब्यूरो की अपनी रिलीज़ कहती है कि यह बढ़त “मासिक सभी वस्तुओं की बढ़ोतरी के आधे से ज़्यादा” के लिए ज़िम्मेदार थी। बारह महीनों में गैसोलीन 34.2 प्रतिशत चढ़ा है, और ऊर्जा कुल मिलाकर 20.4 प्रतिशत ऊपर है। इसका कारण ईरान के साथ युद्ध है, जिसने फ़ारस की खाड़ी से कच्चे तेल के बहाव को घटाया और उससे परिष्कृत होने वाली हर चीज़ की कीमत बढ़ा दी। एयरलाइन किराए, जो जेट ईंधन की कीमत के साथ चलते हैं, साल भर में 22.4 प्रतिशत ऊपर हैं।

खाद्य और ऊर्जा को निकाल दें तो तस्वीर शांत दिखती है। सितंबर में कोर कीमतें 0.3 प्रतिशत बढ़ीं, जो अगस्त जितनी ही रफ़्तार है, और साल भर में 2.6 प्रतिशत, जो अगस्त के 2.4 प्रतिशत से ऊपर है। यह पूर्वानुमानकर्ताओं के 2.5 प्रतिशत से ज़्यादा है, पर मुख्य आँकड़े से काफ़ी नीचे। खाद्य कीमतें महीने भर में स्थिर रहीं; किराने का सामान 0.1 प्रतिशत गिरा। कोर सूचकांक का सबसे बड़ा हिस्सा, आवास, 0.4 प्रतिशत बढ़ा, जो अगस्त से थोड़ा तेज़ है।

तो सितंबर किसी अर्थव्यवस्था के गरम होने से कम, एक तेल झटके को सोखने जैसा दिखता है। यह फ़र्क़ मायने रखता है, क्योंकि केंद्रीय बैंकों को ठीक यही फ़र्क़ करना सिखाया जाता है। दर बढ़ाने से होर्मुज़ जलडमरूमध्य से और तेल नहीं निकलेगा। वह बस यह कर सकती है कि ईंधन की लागत में एक बार की छलाँग को कंपनियों और कामगारों के लिए कीमतों और वेतन में स्थायी बढ़ोतरी बनने से कठिन बना दे।

वेतन पर दबाव

सितंबर के सबूत बताते हैं कि कामगार उस होड़ में नहीं जीत रहे। ब्यूरो की वेतन पर साथ आई रिलीज़ दिखाती है कि वास्तविक औसत प्रति घंटा आय, जो वेतन को महंगाई के हिसाब से समायोजित करती है, अगस्त से सितंबर के बीच 0.5 प्रतिशत गिरी और एक साल पहले से 0.7 प्रतिशत कम है। महीने में नॉमिनल प्रति घंटा वेतन सिर्फ़ 0.1 प्रतिशत बढ़ा।

यह वेतन-कीमत सर्पिल के ठीक उलट है। जब वेतन कीमतों से इतना पीछे रहता है, तो घरों के पास ख़र्च करने को कम होता है, जो समय के साथ माँग को धीमा करता है और अपने आप कीमतों का दबाव ढीला करता है। यही वजह है कि ऊर्जा झटके राजनीतिक रूप से भी नुक़सानदेह होते हैं। पेट्रोल अर्थव्यवस्था की सबसे दिखने वाली कीमत है: हर हफ़्ते ख़रीदा जाता है और हर चौराहे पर फ़ुट-भर ऊँचे अंकों में लिखा होता है।

फ़ेड किस पर नज़र रख रहा है

फ़ेड ने 16 सितंबर को अपनी लक्ष्य सीमा एक चौथाई प्रतिशत अंक बढ़ाकर 3.75 से 4 प्रतिशत की, तीन साल में पहली बढ़ोतरी, और यह फ़ैसला 12-0 के मत से हुआ। उस बैठक का विवरण दिखाता है कि अधिकारी तेल की कीमत से कम, इस बात से ज़्यादा चिंतित थे कि वह कहाँ ले जा सकती है। कई ने ध्यान दिलाया कि ऊर्जा कीमतें जितने लंबे समय तक ऊँची रहेंगी, “कुछ क्षेत्रों में लागत बढ़ने से व्यापक मूल्य दबाव बनने का जोखिम उतना ही बड़ा होगा।” कुछ सदस्यों ने तर्क दिया कि ऊँची नीतिगत दर “ऊर्जा बाज़ार में व्यवधान से जुड़ी क्षेत्र-विशिष्ट कीमत बढ़ोतरी” को लगातार महंगाई में फैलने से रोकने में मदद करेगी। अधिकांश को उम्मीद थी कि एक और बढ़ोतरी “साल के अंत तक उचित होगी।”

उसी विवरण में धैर्य का सबसे अच्छा तर्क भी है। प्रतिभागियों ने माना कि अल्पकालिक अपेक्षाएँ बढ़ने के बावजूद लंबी अवधि की महंगाई अपेक्षाएँ “समिति के 2 प्रतिशत लक्ष्य के अनुरूप स्तरों पर बनी रहीं।” कुछ ने यह चेतावनी भी दी कि लक्ष्य से पाँच साल से ज़्यादा ऊपर रहने के बाद ऊँची महंगाई अपेक्षाओं और वेतन-निर्धारण को प्रभावित करने लगे। सितंबर की रिपोर्ट दोनों पक्षों को कुछ आधार देती है। कोर कीमतें पूर्वानुमान से तेज़ बढ़ीं, पर वास्तविक वेतन गिरे, और वेतन-कीमत सर्पिल ऐसा नहीं दिखता।

एक बाज़ार जिसने दो बार राय बदली

ट्रेडर तय करने में जूझ रहे हैं। रिलीज़ से पहले CME ग्रुप का FedWatch टूल, जो फ़्यूचर्स कीमतों से संभावनाएँ निकालता है, 27 से 28 अक्टूबर की बैठक में बढ़ोतरी की संभावना 22 प्रतिशत पर रखे हुए था। रिपोर्ट के कुछ घंटों के भीतर यह CME ग्रुप के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत तक चढ़ गया। 20 अक्टूबर तक FXStreet ने बताया कि मनी मार्केट अक्टूबर में ठहराव की क़ीमत लगा रहे थे, जबकि दिसंबर में बढ़ोतरी अब भी संभव मानी जा रही थी।

यह बदलाव समझ में आता है। जो फ़ेड तेल के झटके के बीच दरें बढ़ाता है, उसे उन घरों को और दबाने का जोखिम है जो पहले ही महंगाई से ज़मीन खो रहे हैं। जो फ़ेड इंतज़ार करता है, वह आपूर्ति के झटके को महंगाई की समस्या बनने दे सकता है। दिसंबर में अधिकारियों के पास फ़ैसला करने से पहले दो और महंगाई रिपोर्टें होंगी, और शायद तेल आपूर्ति की साफ़ तस्वीर भी।

किस पर नज़र रखें

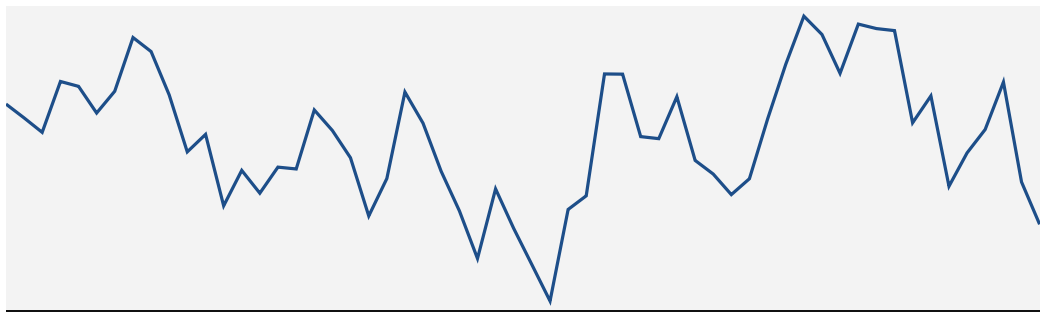
तीन आँकड़े इसका फ़ैसला करेंगे। पहला है एयरफ़ेयर और अन्य ईंधन-भारी सेवाओं को छोड़कर कोर कीमतें; यदि वे प्रति माह लगभग 0.2 प्रतिशत पर लौटती हैं, तो झटका अपनी सीमा में है। दूसरा है आवास, जो मज़बूत होने लगा है। तीसरा है कच्चा तेल। FXStreet के अनुसार 20 अक्टूबर की उन रिपोर्टों से, कि वॉशिंगटन और तेहरान एक समझौते के क़रीब हो सकते हैं, तेल की कीमत नीचे आई, हालाँकि अधिकारियों ने कहा कि कोई समझौता पूरा नहीं हुआ है। एक समझौता हेडलाइन महंगाई को किसी भी दर बढ़ोतरी से ज़्यादा नीचे ला सकता है, और फ़ेड यह जानता है।

विश्व बाज़ार

शुक्रवार, 23 अक्टूबर 2026 तक के बंद भाव। पाँच और 21 कारोबारी सत्रों में बदलाव। स्रोत: याहू फ़ाइनेंस।

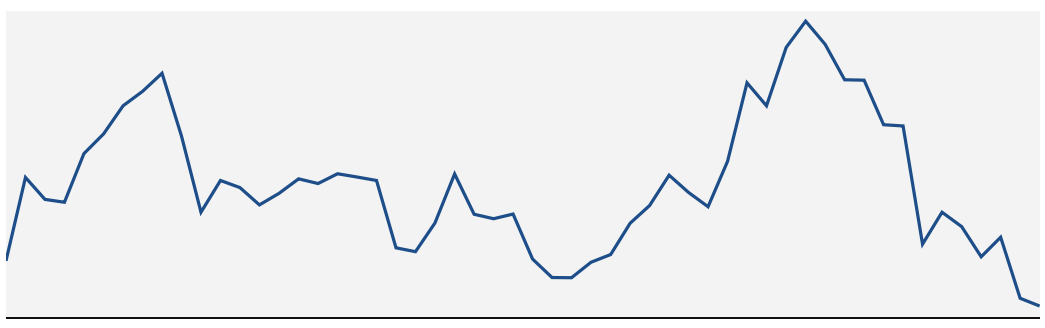
	अंतिम	सप्ताह	माह
वैश्विक शेयर बाज़ार			
एसएंडपी 500	7,624	-0.5%	-1.0%
डाउ जोन्स	52,215	+0.4%	+1.7%
नैस्डैक कंपोजिट	25,955	-0.7%	-3.7%
एफटीएसई 100	10,690	-1.8%	+0.1%
निक्केई 225	62,693	-4.0%	-3.6%
हैंग सेंग	23,093	-4.0%	-7.9%
कमोडिटी			
ब्रेंट क्रूड, $/बैरल	116.72	+6.2%	+9.5%
डब्ल्यूटीआई क्रूड, $/बैरल	103.27	+1.8%	+9.2%
सोना, $/औंस	4,008	-4.1%	-6.7%

एसएंडपी 500, पिछले तीन महीने



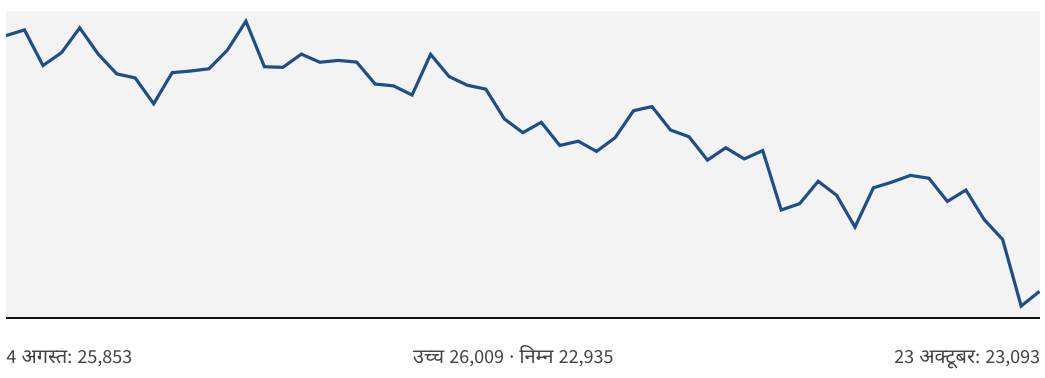
4 अगस्त: 7,737 उच्च 7,819 · निम्न 7,552 23 अक्टूबर: 7,624

निक्केई 225, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 63,958 उच्च 70,684 · निम्न 62,693 23 अक्टूबर: 62,693

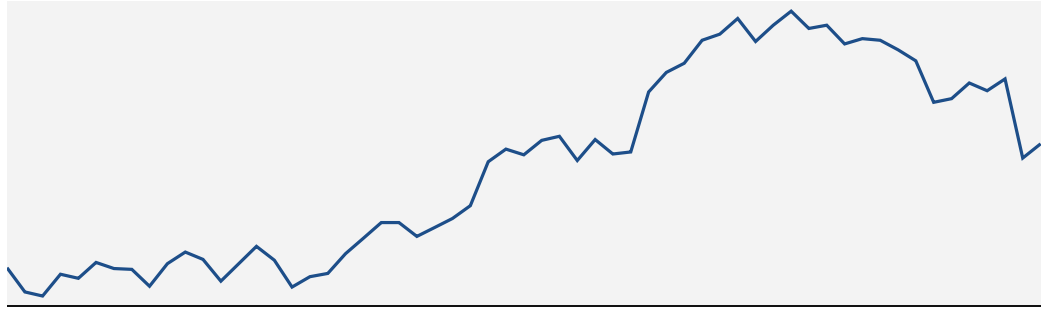
हैंग सेंग, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 25,853 उच्च 26,009 · निम्न 22,935 23 अक्टूबर: 23,093

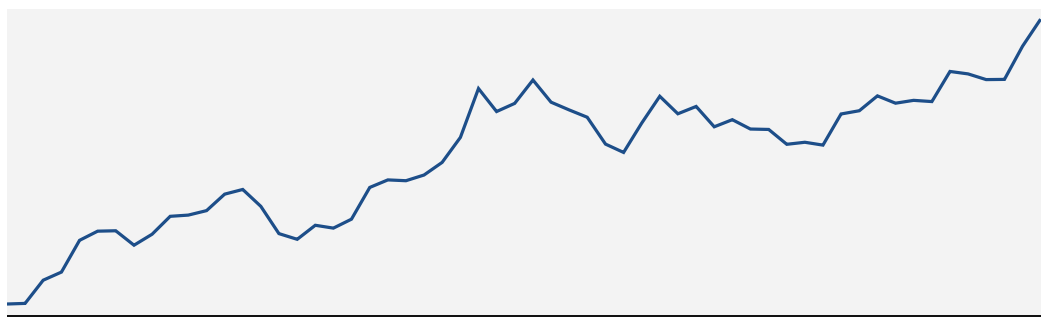
	अंतिम	सप्ताह	माह
अमेरिकी ब्याज दरें			
अमेरिकी 3-माह बिल, %	4.03	-4bp	-4bp
अमेरिकी 5-वर्षीय बॉन्ड, %	4.80	-9bp	-22bp
अमेरिकी 10-वर्षीय बॉन्ड, %	4.99	-11bp	-17bp
अमेरिकी 30-वर्षीय बॉन्ड, %	5.32	-12bp	-15bp

अमेरिकी 10-वर्षीय बॉन्ड, %, पिछले तीन महीने



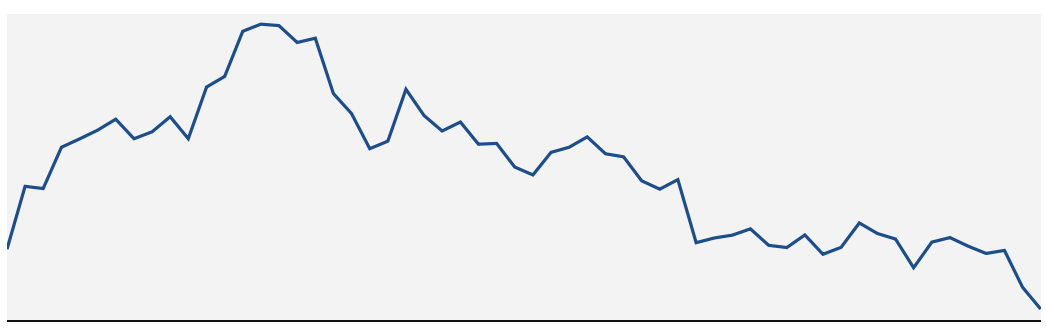
3 अगस्त: 4.69 उच्च 5.31 · निम्न 4.62 23 अक्टूबर: 4.99

ब्रेंट क्रूड, $/बैरल, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 79.36 उच्च 116.72 · निम्न 79.36 23 अक्टूबर: 116.72

सोना, $/औंस, पिछले तीन महीने



4 अगस्त: 4,153 उच्च 4,698 · निम्न 4,008 23 अक्टूबर: 4,008